कक्षा - 1- 10 वीं (' बी ' कोर्स)

व्यावहारिक व्याकरण -

- वर्ण-विच्छेद , वर्तनी : ' र ' के विभिन्न रूप , अनुस्वार , अनुनासिक , नुक्ता (आगत ध्वनियाँ) ४
- पाठों के संदर्भ में उपसर्ग - प्रत्यय से शब्द निर्माण ३
- पर्यायवाची,विलोम,अनेकार्थी शब्द,वाक्यांशों के लिए एक शब्द ४
- वाक्यों के अंग - सरल वाक्य ३
- विराम चिह्नों का प्रयोग ३
- मुहावरों का वाक्य - प्रयोग ३

वर्ण - विच्छेद

वर्ण – विच्छेद :- संश्लिष्ट वर्णों को अलग-अलग करना। जैसे – ' क ' में क् तथा अ का संगम है। अत: ' क ' का वर्ण-विच्छेद है – क् + अ ।

वर्ण - व्यवस्था के कुछ महत्त्वपूर्ण नियम :-

- प्रत्येक व्यंजन हलंत सहित होता है। जैसे – क् , ख् , प् , श् आदि।

- व्यंजन का उच्चारण स्वर के बिना नहीं किया जा सकता है। अत: अक्षरमाला में उसे क् + अ , ख् + अ , प् + अ , श् + अ आदि रूपों में लिखा जाता है।

- व्यंजन में स्वरों के योग से निम्नलिखित रूप बनते हैं –

क् + आ = का	क् + इ = कि	क् + ई = की	क् + उ = कु
क् + ऊ = कू	क् + ए = के	क् + ऐ = कै	क् + ओ = को
क् + ऋ = कृ	क् + औ = कौ	क् + ङ = कं	क् + अँ = कँ
क् + अ: = क:			

- विशेष वर्ण संयोग –

क् + ष = क्ष	त् + र = त्र	श् + र = श्र	ज् + ञ = ज्ञ
द् +य्+अ = द्य	द् + व्+ अ = द्व	ह् + म्+ अ = ह्म	क् + र् = अ = क्र
र् + क् + अ = र्क	ह् + न् + अ = ह्न	द्+ ध् + अ = द्ध	ल् + ल् + अ = ल्ल

वर्ण – विच्छेद कीजिए :-

- ज्ञान .....
- श्रवण .....
- हरिद्वार.....
- उद्धार .....
- ध्वनि .....
- वाक्य .....
- स्वतंत्र .....
- कुरुक्षेत्र .....
- अनिवार्य .....
- चिह्न .....

उत्तर :-

- ज् + ञ्+ आ + न्+ अ
- श् + र् + अ + व् +अ + ण् + अ
- ह् + अ + र् + इ + द् + व् + आ + र् + अ
- उ + द् + ध् + आ + र् + अ
- ध् + व् + अ + न्+ इ
- व् + आ + क् + य् + अ
- स् + व् + अ + त्+ अ + न् + त् +र् + अ
- क्+ उ + र् +उ + क् +ष् +ए + त् + र् + अ
- अ + न्+ इ + व् +आ + र् +य् + अ
- च् + इ + ह् + न् + अ
- ह् + इ् + इ् + इ +य् + आँ

- दीर्घ ....
- उष्ट्र ....
- रिपु ....
- महत्त्व ....
- परीक्षा ....
- ऋषि ....
- हिंदी ....
- वर्तनी ....
- अभ्यास ....
- विद्यालय

....

- संयुक्त

....

- द् + ई + र् + घ् + अ
- उ + ष् + ट् + र् + अ
- र् + इ + प् + उ
- म् + अ + ह् + अ + त् + त् + व् + अ
- प् + अ + र् + ई + क् + ष् + आ
- ऋ + ष् + इ
- ह् + इ + न् + द् + ई
- व् + अ + र् + त् + अ + न् + ई
- अ + भ् + य् +आ + स् + अ
- व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ
- स् + अ + न् + य् + उ + क् + त् + अ
- उ + ल् + ल् + ए + ख् + अ

अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर

- **अनुस्वार** (ं) मूलत: अनुनासिक व्यंजन (ङ् , ञ् , ण् , न् , म्) का मात्रा रूप है। इसे बोलते समय प्रश्वास – वायु नाक से बाहर निकलती है। उदाहरणतया - हंस , घंटी , चंपा , शंख आदि ।

- **अनुनासिक** (ँ) मूलत: स्वर होते हैं । इनका उच्चारण मुख और नासिका दोनों से होता है। उदाहरणतया – आँख , हँसमुख , सँभाल , सँवार ,

‘ र ’ के विभिन्न रूप

‘ र ’ हिन्दी का विशेष वर्ण है। इसके लेखन में सर्वाधिक विविधता है।

- ‘ र ’ पर ‘ उ ’ या ‘ ऊ ’ की मात्रा इस प्रकार लगती है –

  र् + उ = रु र् + ऊ = रू

- यदि ‘ र ’ के बाद कोई व्यंजन हो तो ‘ र ’ अगले स्वर युक्त व्यंजन पर स्थित हो जाता है।

उदाहरण –

निर् + मल = निर्मल पुनर + रचना = पुनर्रचना निर् + भय = निर्भय

शिरोरेखा पर जाते समय ‘र ’ (रेफ़) मात्रा का रूप धारण कर लेता है।

- यदि ‘र ’ (स्वर सहित र) किसी व्यंजन की बाद आता है तो उसके रूप भिन्न हो जाते हैं। पाई वाले व्यंजनों के साथ ‘ र ’ का रूप निम्न प्रकार से आता है –

  त् + र = त्र क् + र = क्र श + र = श्र

  प् + र = प्र

  उदाहरण – पत्र , क्रम , ग्रह , प्रकार , भद्रता , संक्रमण , श्रवण , नम्रता आदि।

- बिना पाई वाले व्यंजन के बाद आने पर ‘ र ’ इस प्रकार रूप धारण करता है –

  ट् + र = ट्र ड् + र = ड्र

‘ ऋ ’ की मात्रा का प्रयोग –

क् + ऋ = कृ ह् + ऋ = हृ म् + ऋ = मृ ध् + ऋ = धृ

उदाहरण - कृष्ण , मृत्यु , हृदय , सृजन , उद्धृत , पृथक , संस्कृत , दृष्टि आदि।

अर्द्धचंद्राकार (ऑ) – हिन्दी में कुछ अंग्रेज़ी ध्वनियाँ स्थान पा चुकी हैं। कॉलेज , डॉक्टर आदि शब्दों में कुछ ऐसी ध्वनिया~म होती हैं जो हिन्दी के लिए नई हैं। कॉलेज के ‘ कॉ ’ में न तो ‘ का ’ है न तो ‘ को ’। यह ‘ आ ’ और ‘ ओ ’ के बीच की ध्वनि है। इसे (ऑ) अर्धचंद्राकार रूप में व्यक्त किया जाता है।

उदाहरण – कॉटेज , मैकॉले , कॉलगेट , डॉग , डॉलर , चॉक , ऑफ़िस आदि।

नुक्ता (़)

उर्दू की क़ , ख़ , ग़ , ज़ , फ़ ध्वनियाँ हिन्दी की ध्वनियों से भिन्न हैं।

अंग्रेज़ी में ज़ तथा फ़ ध्वनियाँ हिन्दी की ज तथा फ से भिन्न हैं।

अंग्रेज़ी तथा उर्दू शब्दों में ' ज़ ' तथा ' फ़ ' का प्रयोग करते समय निक्ता (.) का प्रयोग करना चाहिए। नुक्ते बिना भी ये शब्द स्वीकीर्य हैं। क़ , ख़ तथा ग़ में अभी नुक्ता लगाने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं समझी गई।

उदाहरण –

ज़ – इज़रायल , रिलीज़, ब्लेज़र , ज़ज , कमज़ोर , मज़दूर , ज़िंदगी , इज़्ज़त , मरीज़ , ज़ुल्म , ज़रा , ज़ेवर , ज़ोरदार , ज़ुल्फ ,

फ़ - फ़ादर , फ़ीचर , फ़्रेंच , फ़ोटो , फ़र्ज़ , फ़रियाद , फ़तवा , फ़जीहत , फ़कीर , फ़रमान , फ़रमाइश आदि।

व र्त नी

वर्तनी :- वर्तनी का तात्पर्य है - शब्दों में प्रयुक्त वर्णों की क्रमिकता। किस शब्द में वर्णों का क्या क्रम तथा स्थान है , इसका निश्चय वर्तनी करती है। शुद्ध भाषा लिखने और पढ़ने में शुद्ध उच्चारण का बहुत महत्त्व है। हिंदी ध्वन्यात्मक भाषा है। इसमें जो बोला जाता है , वही लिखा जाता है। इसलिए हिंदी की वर्तनी में प्रचलित होने वाली अधिकांश अशुद्धियों का कारण उनका अशुद्ध उच्चारण है।

सामान्य रूप से प्रचलित अशुद्धियाँ और उनके शुद्ध रूप :-

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
घनिष्ट	घनिष्ठ	अमावश्या	अमावस्या	आदर्स	आदर्श
धोका	धोखा	असोक	अशोक	प्रशाद	प्रसाद
मिष्टान्न	मिष्ठान	नमश्कार	नमस्कार	कश्ट/कस्ट	कष्ट
हिंदुस्थान	हिंदुस्तान	प्रसंसा	प्रशंसा	सर्म	शर्म
धंदा	धंधा	शाशन	शासन	विषद	विशद
मनुश्य	मनुष्य	अभिशेक	अभिषेक	रास्ट्र	राष्ट्र

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पूर्ब	पूर्व	किरन	किरण	कृप्या	कृपा
बाणी	वाणी	रनभूमि	रणभूमि	कर्त्ता	कर्ता
बन	वन	रामायन	रामायण	आल्हाद	आह्लाद
बिष	विष	प्रनाम	प्रणाम	प्रज्ज्वलित	प्रज्वलित
जमराज	यमराज	पुन्य	पुण्य	द्वंद	द्वंद्व
जजमान	यजमान	उदेश्य	उद्देश्य	आधीन	अधीन
जादव	यादव	उज्वल	उज्ज्वल	आजकाल	आजकल
कछा	कक्षा	कर्त्तव्य	कर्तव्य	नराज	नाराज
छत्रिय	क्षत्रिय	ब्राम्हण	ब्राह्मण	चहिए	चाहिए
छमा	क्षमा	स्वास्थ	स्वास्थ्य	अतिथी	अतिथि
नछत्र	नक्षत्र	चिन्ह	चिह्न	क्योंकी	क्योंकि
लक्ष्छण	लक्षण	सटेशन	स्टेशन	बुदधी	बुदधि

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आर्शीवाद	आशीर्वाद	गुरू	गुरु	कन्गन	कंगन
निरोग	नीरोग	पत्नि	पत्नी	दन्ड	दंड
बिमारी	बीमारी	रिषि	ऋषि	पन्डित	पंडित
शुन्य	शून्य	क्षत्रीय	क्षत्रिय	इस्कूल	स्कूल
अहिल्या	अहल्या	जागृत	जाग्रत	सुस्वागत	स्वागत
अनुसुया	अनसूया	प्रभू	प्रभु	श्रृंगार	शृंगार
ओद्योगिक	औद्योगिक	अंधेरा	अँधेरा	सहस्त्र	सहस्र
ग्रहीत	गृहीत	अँदर	अंदर	स्राप	श्राप
दृष्टा	द्रष्टा	दांत	दाँत	सौहाद्र/सौहार्द्र	सौहार्द
त्यौहार	त्योहार	सन्यासी	संन्यासी	परिछेद	परिच्छेद
प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	आंख	आँख	विछिन	विच्छिन्न
		मांस	माँस	कर्मधार्य	कर्मधारय

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
उपरोक्त	उपर्युक्त	जायें	जाएँ	परिनाम	परिणाम
जगतगुरु	जगदगुरु	देखिये	देखिए	उधाहरण	उदाहरण
नरेन्दर	नरेन्द्र	महिलाऐं	महिलाएँ	कोशीश	कोशिश
सम्मार्ग	सन्मार्ग	चाहिये	चाहिए	पक्का	पक्का
अनाधिकार	अनधिकार	बताइये	बताइए	दाइत्व	दायित्व
उतपात	उत्पात	स्थाई	स्थायी	अंन्याय	अन्याय
दुरावस्था	दुरवस्था	उजारना	उजाड़ना	नगन्य	नगण्य
निश्वास	नि:श्वास	लराई	लड़ाई	अनुरोद	अनुरोध
सन्मुख	सम्मुख	हिन्दि	हिन्दी	विधार्थी	विद्यार्थी
गयी	गई	परछायी	परछाई	भासा	भाषा
उत्तरदाई	उत्तरदायी	चारपायी	चारपाई	पर्यत्न	प्रयत्न

पर्यायवाची शब्द

एक ही अर्थ को प्रकट करने वाले एकाधिक शब्द पर्यायवाची कहलाते हैं। यूँ तो किसी भाषा में कोई दो शब्द समान अर्थ वाले नहीं होते , उनमें सूक्ष्म – सा अंतर अवश्य होता है। परंतु अर्थ के स्तर पर अधिक निकट होने वाले शब्दों को समानार्थी कहा जाता है। उदाहरण -

अहंकार....	घमंड , अभिमान , दर्प , दंभ
अमृत.....	अमिय , सुधा , पीयूस , अमी
अंधेरा.....	तम , तिमिर , अंधकार
अतिथि...	मेहमान , पाहुन , आगंतुक
असुर.....	दनुज , दानव , राक्षस , निशाचर
आकाश...	गगन , आसमान , नभ , अंबर
आँख.....	नयन , नेत्र , लोचन , दृग , चक्षु
आग.....	अनल , पावक , ज्वाला , अग्नि
आभूषण...	अलंकार , गहना , ज़ेवर
ईश्वर....	परमात्मा , प्रभु . जगदीश , भगवान
उद्यान....	उपवन , बगीचा , वाटिका , कुसुमाकर
कमल....	पंकज , नीरज , जलज , वारिज , पद्म
कपड़ा....	वस्त्र , अंबर , वसन , पट , चीर
कृष्ण.....	मोहन , माधव , गोपाल , गिरिधर , केशव
गाय.....	गौ , धेनु , सुरभि
गंगा....	भागीरथी , सुरनदी , जाह्नवी , त्रिपथगा
गणेश...	लंबोदर , गजानन , एकदंत , विनायक
घोड़ा....	अश्व , तुरंग , बाजि , घोटक , हय , सैंधव

घर....	सदन , गृह , निकेतन , आलय
चाँद.....	राकेश , शशि , रजनीश , इंदु
चाँदनी.....	ज्योत्स्ना , चंद्रिका , कौमुदी
जंगल...	वन , विपिन , कानन , अरण्य
जल.....	पानी , वारि , नीर , सलिल , अंबु
तलवार...	खड्ग , असि , करवाल , कृपाण
तालाब...	ताल , सरोवर , सर , पुष्कर
देवता.....	सुर , अमर , देव , अजर , विबुध
दूध...	पय , दुग्ध , गोरस , क्षीर
दिन.....	दिवस , वार , वासर , दिवा
दु:ख.....	कष्ट , क्लेश , वेदना , पीड़ा
नदी....	सरिता , तटिनी , तरंगिणी
पत्थर..	पाहन , प्रस्तर , शिला , पाषाण
पुत्र....	बेटा , सुत , तनय , आत्मज , नन्दन
पुत्री....	बेटी , सुता , तनया , आत्मजा , तनुजा
पत्ता....	पत्र , पर्ण , किसलय , पल्लव
पर्वत....	नग , गिरि , पहाड़, अचल , भूधर , शैल
पक्षी.....	खग , विहग , विहंगम , पखेरु , अंडज
पति.....	स्वामी , नाथ , वर , वल्लभ , कांत , भर्ता
पत्नी....	गृहिणी , दारा , वधू , वल्लभा , तिय , भार्या
मनुष्य...	मनुज , मानव , इंसान , जन , नर , आदमी
पृथ्वी....	भू , मही , धरती , धरा , अवनि , वसुधा
फूल.....	पुष्प , कुसुम , प्रसून , सुमन , पुहुप
बंदर.....	कपि , मर्कट , वानर , हरि , शाखामृग
बिजली....	विद्युत , दामिनी , सौदामिनी , चंचला , चपला
बाल.....	

ब्राह्मण.... भूदेव , भूसुर , विप्र , द्विज

बर्फ़..... तुषार , हिम ,तुहिन

भौंरा..... मधुप , मधुकर ,भ्रमर ,अलि,मिलिंद

महादेव... शिव , शंभु , शंकर , महेश , त्रिनेत्र

मित्र..... दोस्त , सखा , मीत , सहचर , सुहृद

मेघ... बादल , जलद , वारिद ,अंबुद , पयोद

मदिरा... सुरा , मधु , पय , शराब , वारुणी

माता..... माँ , जननी , अंबा , मातृ

युद्ध... रण , संग्राम , लड़ाई , समर

रात्रि..... रात , रजनी , निशा ,यामिनी , निशि

राजा..... नरेश , नरेंद्र , भूप , महीप , भूपाल

लहू.... रक्त , ख़ून , रुधिर , शोणित

वायु.. पवन , हवा , समीर , अनिल , मारुत

वृक्ष.... पेड़ , तरु , पादप , विटप , दरख़्त , रुक्ष

शत्रु.... दुश्मन , रिपु , अरि , वैरी , अराति

सेना.... अनी , दल , चमू , कटक , फौज़

सोना.... हेम , कंचन , कुंदन , स्वर्ण , हिरण्य

सूरज..... दिनकर , दिवाकर , प्रभाकर , भास्कर , रवि

समुद्र..... जलधि , उदधि , रत्नाकर , सागर , सिंधु , अंबुधि

सिंह.... केसरी , हरि , शेर , व्याघ्र , मृगेंद्र , मृगराज

स्वर्ग... बैकुंठ ,सुरलोक ,देवलोक , द्युलोक , अमरलोक

स्त्री.... नारी , महिला , कामिनी , वामा ,रमणी , अबला

साँप..... नाग , सर्प , भुजंग , विषधर , व्याल , अहि

संसार..... जगत , जग , दुनिया , विश्व , भव

हाथ.... कर , हस्त , पाणि

हाथी.....

विलोम शब्द

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अस्त..	उदय	अतिवृष्टि..	अनावृष्टि	आदर	निरादर
अक्षम..	सक्षम	अनुराग..	विराग	आहार	निराहार
अर्थ..	अनर्थ	अनुकूल	प्रतिकूल	आयात	निर्यात
अनाथ..	सनाथ	अंधेरा	उजाला	आकर्षण	विकर्षण
अपना..	पराया	अवनति	उन्नति	आर्द्र	शुष्क
अमृत..	विष	अल्पायु	दीर्घायु	आस्तिक	नास्तिक
अल्पज्ञ..	बहुज्ञ	अनुज	अग्रज	आलसी	परिश्रमी
अपव्यय..	मितव्यय	आकाश	पाताल	आशा	निराशा

विलोम शब्द

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
आवश्यक	अनावश्यक	इच्छा	अनिच्छा	उचित	अनुचित
आय	व्यय	इहलोक	परलोक	उत्तर	दक्षिण
आगत	विगत	उत्तर	प्रश्न	उत्कर्ष	अपकर्ष
आदर्श	यथार्थ	उग्र	शांत	उपयोगी	अनुपयोगी
आदि	अनादि	उपकार	अपकार	एक	अनेक
आसक्ति	विरक्ति	उत्थान	पतन	ऐच्छिक	अनिवार्य
आर्य	अनार्य	उदार	अनुदार	ऋजु	वक्र/कुटिल
आरोह	विरोह	उत्कृष्ट	निकृष्ट	उर्वरा	ऊसर

विलोम शब्द

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
उद्धत	विनीत	खल	सज्जन	जीवन/जन्म	मरण/मृत्यु
उद्दंड	विनम्र	गुण	दोष/अवगुण	तामसिक	सात्विक
कटु	मधुर	गृहस्थ	संन्यासी	दाएँ	बाएँ
कायर	वीर	घृणा	प्रेम	दुर्लभ	सुलभ
कनिष्ठ	ज्येष्ठ/वरिष्ठ	चंचल	स्थिर	देव	दानव
कठोर	नरम/मृदु	जय	पराजय	धनी	निर्धन
कृत्रिम	प्राकृतिक	जड़	चेतन	धृष्ट	विनीत
कृतज्ञ		जटिल	सरल	निंदा	प्रशंसा

विलोम शब्द

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
निर्बल	सबल	गुरु	शिष्य/लघु	ध्वंस	निर्माण
निर्मल	मलिन	ग्रामीण	शहरी	नवीन	प्राचीन
नूतन	पुरातन	जागरण	निद्रा	नरक	स्वर्ग
पक्ष	विपक्ष	जीवित	मृत	निरर्थक	सार्थक
क्रय	विक्रय	ठोस	तरल	नीरस	सरस
कीर्ति	अपकीर्ति	तीव्र	मंद	पक्षपाती	निष्पक्ष
खरा	खोटा	दुर्जन	सज्जन	प्रवृत्ति	निवृत्ति
गहरा	उथला	दोषी	निर्दोष	पंडित	मूर्ख

विलोम शब्द

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
बुराई	भलाई	रक्षक	भक्षक	प्रौढ़	शिशु
भद्र	अभद्र	रुग्ण	स्वस्थ	बंधन	मोक्ष/मुक्ति
महान	क्षुद्र	लौकिक	अलौकिक	भूषण	दूषण
मान	अपमान	विरोध	समर्थन	मौखिक	लिखित
महात्मा	दुरात्मा	वैध	अवैध	याचक	दाता
यश	अपयश	शुद्ध	अशुद्ध	रहित	सहित
यथार्थ	कल्पित	सफल	विफल	राजा	रंक
योगी	भोगी	प्रत्यक्ष	परोक्ष	रुदन	हास्य

विलोम शब्द

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
रिक्त	पूर्ण	संक्षेप	विस्तार	सदाचार	दुराचार
व्यष्टि	समष्टि	सजीव	निर्जीव	सृष्टि	प्रलय/विनाश
लुप्त	प्रकट	सत्य	असत्य	स्वतंत्र	परतंत्र
विष	अमृत	समीप	दूर	स्थूल	सूक्ष्म
वरदान	अभिशाप	सगुण	निर्गुण	सेवक	स्वामी
शीत	ग्रीष्म	स्थायी	अस्थायी	संयोग	वियोग
शांत	क्षुब्ध	स्वदेश	विदेश	ह्रस्व	दीर्घ
शोक	हर्ष	साकार	निराकार	संधि	विग्रह

अनेकार्थी शब्द

अक्षर..	नष्ट न होने वाले , ईश्वर , वर्ण
अंबर	कपड़ा , आकाश , कपास
अर्थ	धन , मतलब , उद्देश्य
अलि	भौंरा , सखी , कोयल
अंक	गोद , गणना के अंक , मध्य
आम	एक फल , सामान्य , मामूली
उत्तर	जवाब , एक दिशा , बाद का
कनक	सोना , धतूरा , गेहूँ
कर	हाथ ,किरण, हाथी की सूँड, टैक्स
कल	मशीन , चैन , बीता हुआ कल
काल	समय , मक्रृत्यु
कक्षा	छात्रों का समूह , परिधि , समूह
कुल	सब , वंश
गुरु	बड़ा , महान् , शिक्षक
घट	घड़ा , शरीर , हृदय
घन	बादल , हथौड़ा , अधिक बड़ा

ठाकुर देवता , स्वामी , क्षत्रिय

तार उद्धार , लोहे या चासनी का तार

दंड डंडा , सज़ा , व्यायाम , डंठल

दक्षिण दिशा , दाहिना , अनुकूल

द्विज दाँत , ब्राह्मण , पक्षी

नाग साँप , हाथी

निशान चिह्न , ध्वज , डंका

पतंग सूर्य , कीड़ा , कनकौआ

पत्र चिट्ठी , पत्ता , समाचार-पत्र

पद चरण , शब्द , ओहदा , कविता का पद

पय दूध , पानी , अमृत

पृष्ठ पन्ना , पीठ , सतह , पीछे का भाग

भूत प्रेत , बीता हुआ , प्राणी

मत राय , संप्रदाय , निषेध

मधु मीठा , शहद , शराब

मुद्रा मोहर , सिक्का , मुख का भाव

वर्ण जाति , रंग , अक्षर

सोना शयन , एक धातु

हरि विष्णु , सूर्य , इंद्र , सर्प , सिंह

हार पराजय , माला

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

• जो नहीं मरता है	• अमर
• जो कभी बूढ़ा न होता हो	• अजर
• मांस खाने वाला	• मांसाहारी
• शाक-भाजी खाने वाला	• शाकाहारी
• जो ईश्वर को मानता हो	• आस्तिक
• जो ईश्वर को न मानता हो	• नास्तिक
• जो पहले कभी न हुआ हो	• अभूतपूर्व
• जो पहले हुआ हो	• भूतपूर्व
• स्वयं पैदा होने वाला	• स्वयंभू
• जिसका कोई शत्रु न हो	• अजातशत्रु
• जो शत्रुओं का नाश करता हो	• शत्रुघ्न

• जो सब कुछ जानता हो	• सर्वज्ञ
• जो थोड़ा जानता हो	• अल्पज्ञ
• जो बहुत कुछ जानता हो	• बहुज्ञ
• जिसका भाग्य अच्छा हो	• भाग्यशाली
• बहुत अधिक वर्षा	• बहुवृष्टि
• बहुत कम वर्षा	• अल्पवृष्टि
• जब वर्षा न हो	• अनावृष्टि
• नीचे की ओर आना	• निम्नगामी
• ऊपर की ओर आना	• ऊर्ध्वगामी
• घास काटने वाला	• घसियारा
• लकड़ी काटने वाला	• लकड़हारा

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

• जानने की इच्छा रखने वाला	• जिज्ञासु
• जिस पर विश्वास किया जा सके	• विश्वासी
• जो बहुत बोलता हो	• वाचाल
• पंद्रह दिनों में होने वाला	• पाक्षिक
• जिसका मूल्य बहुत अधिक हो	• मूल्यवान
• उपकार को न मानने वाला	• कृतघ्न
• उपकार को मानने वाला	• कृतज्ञ
• सप्ताह में एक बार होने वाला	• साप्ताहिक
• जिसके आने की तिथि निश्चित न हो	• अतिथि
• बिना सोचे-विचारे किया हुआ विश्वास	• अंधविश्वास
• जिसे क्षमा न किया जा सके	• अक्षम्य

• जिसमें संदेह न हो	• नि:संदेह
• जो ऊपर कहा गया हो	• उपर्युक्त
• सबको एक-सा देखने वाला	• समदर्शी
• जिसका आकार हो	• साकार
• जो आँखों के सामने हो	• प्रत्यक्ष
• अच्छे आचरण वाला	• सदाचारी
• काम से जी चुराने वाला	• कामचोर
• जो कम खाता हो	• अल्पाहारी
• जो इस लोक में न हो	• अलौकिक
• जिसे कहा न जा सके	• अकथनीय
• जहाँ जाना आसान हो	• सुगम

विराम चिह्न

लेखक के भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग वाक्य में किया जाता है , उन्हेम ' विराम चिह्न ' कहते हैं। इससे वाक्य-विन्यास और भावों की अभिव्यक्ति में स्पष्टता आ जाती है और सौंदर्य भी बढ़ता है।

हिन्दी में प्रचलित प्रमुख विराम चिह्न निम्नलिखित हैं –

- पूर्ण विराम (।)
- अल्पविराम (,)
- अर्द्धविराम (;)
- प्रश्नसूचक (?)
- विस्मयादिबोधक (!)
- योजक (-)
- निर्देशक (डैस) (–)
- अवतरण चिह्न ('.....') (" ....")
- कोष्ठक ( )
- हंसपद (/\ )

१ . **पूर्ण विराम** - सामान्य कथन वाले सभी प्रकार के वाक्यों – सरल , संयुक्त और मिश्र के अंत में पूर्ण विराम का चिह्न लगाया जाता है।
जैसे – (क) आओ। (ख) राम अच्छा लड़का है।

२. **प्रश्नसूचक चिह्न** - प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में लगाया जाता है।
जैसे – तुम्हारा क्या नाम है ?
यदि एक ही वाक्य में कई प्रश्नसूचक उपवाक्य हों तो पूरे वाक्य की समाप्ति पर ही प्रश्नसूचक चिह्न लगाया जाता है। जैसे – तुम कहाँ गए थे , कैसे आए और क्या चाहते हो ?

३. **विस्मयादिबोधक / सम्बोधनसूचक चिह्न** - हर्ष , विषाद , घृणा , आश्चर्य , भय , प्रार्थना आदि शब्दों , पदबंधों , उपवाक्यों तथा वाक्यों के अंत में लगाया जाता है।
जैसे - (क) आह ! उसे कितनी पीड़ा हो रही है। (**शब्द**)
(ख) इतनी लंबी दीवार ! (**पदबंध**)
(ग) कैसा सुंदर दृश्य है ! (**वाक्य**)
(घ) साथियो ! आज बलिदान का समय आ गया है। (**संबोधन**)

४. **अल्प विराम** - यह वाक्य के बीच में लगाया जाता है।

(क) एक ही प्रकार के कई शब्दों के बाद , लेकिन अंतिम शब्द के पहले ' और ' का प्रयोग होता है। जैसे – दिल्ली , मुम्बई , चेन्नई और कोलकाता भारत के बड़े शहर हैं।

(ख) एक ही प्रकार के कई पदबंधों या उपवाक्यों के बाद , लेकिन अंतिम पदबंध के पहले ' और ' का प्रयोग होता है। जैसे – जब हम सोचते हैं , विचार करते हैं और मनन करते हैं तभी हमारा ज्ञान बढ़ता है।

(ग) वाक्य के प्रारंभ में आने वाले ' हाँ ' , ' नहीं ' के बाद । जैसे – हाँ , तुम ठीक कहते हो। नहीं , मैं ऐसा नहीं कर सकता।

(घ) संबोधन सूचक शब्द के बाद। जैसे – मोहन ! तुम इधर आओ।

(ङ) पर ,परंतु , किंतु , लेकिन , क्योंकि , बल्कि , इसलिए , फिर , वरन् आदि समुच्चयबोधक अव्यय से पहले।जैसे – उसने ने बहुत मेहनत की , परंतु सफल न हो सका।

(च) तारीख के साथ महीने का नाम लिखने के बाद। जैसे – १५ अगस्त , १९४७ को भारत स्वतंत्र हुआ था।

(छ) संयुक्त एवं मिश्र वाक्यों में । जैसे – (१) तुम जानते हो , मैं घूमना-फिरना पसंद करता हूँ। (२) नौकर कमरा झाड़ता है , बिस्तर बिछाता है और बाज़ार से सौदा लाता है।

(ज) अवतरण चिह्न के बाद। जैसे – उसने कहा , " मैं यह कभी नहीं मान सकता।"

(झ) पत्र में संबोधन के बाद। जैसे – महोदय , पूज्य पिताजी , प्रिय मित्र ,...।

५. अवतरण / उद्धरण चिह्न - इसके दो रूप हैं – इकहरा '.....' और दोहरा "....." ।

(१) कवि या लेखक का उपनाम , पाठों का शीर्षक , पुस्तक/समाचार-पत्र आदि का नाम लिखने में इकहरे अवतरण चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे – सूर्यकांत त्रिपाठी ' निराला ' ने ' परिमल ' ग्रंथ की रचना की। दूसरा अध्याय पढ़ो , जिसका शीर्षक है , ' वाणी का महत्त्व '। ' बाल –भारती ' बच्चों की पत्रिका है।

(२) सूक्तियों या कहावतों को स्पष्ट करने के लिए काव्य-पंक्तियों , पदबंधों और उपवाक्यों में भी इकहरे अवतरण चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे – उस बालक पर यह कहावत लागू होती है , ' होनहार बिरवान के होत चिकने पात ' । तुलसीदास ने सत्य ही लिखा है , ' बिनु भय होइ न प्रीति '।

(३) लेखक या वक्ता के कथन को ज्यों का त्यों लिखने के लिए दुहरे अवतरण चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे – प्राचार्य ने कहा , " विद्यार्थियों को अनुशासन मे रहकर अध्ययन करना चाहिए।"

६ . **योजक चिह्न**:-सामासिक पदों या पुनरुक्त और युग्म शब्दों के मध्य यह चिह्न लगाया जाता है। जैसे – भारत-रत्न, सुख-दुख , तन-मन-धन , घर-घर ।

७. **निर्देशक चिह्न** :- यह योजक चिह्न से थोड़ा बड़ा होता है। वाक्याशों तथा वाक्यों के बीच इसका प्रयोग होता है। (१) किसी कथन के पहले :- तुलसीदास का कथन है – " राम नाम की महिमा अपार है।" (२) किन्हीं वस्तुओं , कार्यों आदि का ब्योरा देने में। जैसे – वह निम्नलिखित सामान लाया – मसाले , दालें , फल , मुरब्बा , चटनी और अचार।

८. **कोष्ठक** :- (१) क्रमसूचक अंकों या अक्षरों के साथ। जैसे- दिशाएँ चार होती हैं – (क) पूर्व (ख) पश्चिम (ग) उत्तर (घ) दक्षिण।
(२) कभी-कभी व्याख्यात्मक शब्दों को कोष्ठक में रखा जाता है। जैसे – भरत (दशरथ के पत्र) महातपस्वी थे।

९. **हंसपद** :-लिखते समय कोई शब्द छूट जाने की स्थिति में संबंधित स्थान पर हंसपद लगाकर छूटे शब्द को ऊपर या हाशिए में लिख दिया जाता है।

कि

जैसे - रमेश ने राजू से कहा /\ तुम घर चले जाओ।

वाक्य के अंग तथा सरल वाक्य

वाक्य के अंग :- वाक्य छोटा हो या बड़ा , उसके दो ही अंग होते हैं – उद्देश्य तथा विधेय। प्राय: उद्देश्य वाक्य के प्रारंभ में और विधेय वाक्य के अंत में होता है। जैसे –

	उद्देश्य (जिसके बारे में बात कही जाए)	विधेय (जो बात कही जाए)
१.	भागता हुआ चोर	तुरंत पकड़ा गया।
२.	प्रेमचंद का कहानियाँ	बड़ी रुचि से पढ़ी जाती हैं।

सरल वाक्य :- जिस वाक्य में एक ही विधेय तथा एक ही समापिका क्रिया होती है , उसे सरल वाक्य कहते हैं। जैसे –

१. राम आया । २. मोहन ने खाना खाया। ३. एक लड़का और चपरासी पहुँच गए। ४. मोहन , सोहन और सलीम आ गए हैं।

पहले दो वाक्यों में एक-एक उद्देश्य है , तीसरे में दो उद्देश्य हैं और चौथे में तीन उद्देश्य हैं , परंतु चारों वाक्यों में एक-एक ही विधेय हैं और एक-एक ही समापिका क्रिया हैं। ये सब सरल वाक्य हैं।

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

- अंग-अंग ढीला होना (बहुत थक जाना)
- दिन भर की दौड़-धूप से मेरा अंग-अंग ढीला हो रहा है।
- अंग-अंग मुस्कराना (बहुत प्रसन्न होना)
- परीक्षा में प्रथम आने के कारण उसका अंग-अंग मुस्करा रहा था।
- अपना उल्लू सीधा करना (अपना मतलब निकालना)
- आजकल के नेता बस अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं।
- कोल्हू का बैल (दिन –रात काम में जुटे रहने वाला)
- सरस्वती देवी की बहू तो कोल्हू के बैल की तरह काम में लगी रहती है।
- खून – पसीना एक करना (कठोर परिश्रम करना)
- किसान खून-पसीना एक करके अनाज उगाते हैं।
- चैन की बंसी बजाना (सुख से रहना)
- कपड़े का व्यापार अच्छा चलने के कारण मोहन चैन की बंसी बजा रहा है।
- झक मारना (बेकार में समय बर्बाद करना)
- आलसी और निकम्मे लोग घर में खाली बैठकर झक मारते हैं।
- ढाक के तीन पात (कोई फर्क न पड़ना)
- खेतों में खूब खाद डाला,पर फ़सल पहले जैसी हुई। वही ढाक के तीन पात।

- दौड़-धूप करना (कठिन परिश्रम करना)
- नौकरी पाने के लिए मोहन ने काफ़ी दौड़-धूप की।
- मक्खियाँ मारना (बेकार बैठना)
- आजकल अधिकांश पढ़े-लिखे नौजवान मक्खियाँ मार रहे हैं।
- श्रीगणेश करना (आरंभ करना)
- आज हम अपनी नई दुकान का श्रीगनेश कर रहे हैं।
- गुदड़ी का लाल (साधारण किंतु गुणी व्यक्ति)
- अपने वंश में प्रेमचंद गुदड़ी के लाल थे।
- गागर में सागर भरना (थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कह देना)
- बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया है।
- तिल का ताड़ बनाना (छोटी बात को बड़ा कर देना)
- पत्रकार लोग तिल का ताड़ बना देते हैं ।
- चुल्लू भर पानी में डूब मरना (शर्म के मारे मर जाना)
- तुम जैसे ओछे व्यक्ति को तो चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए।
- घोड़े बेचकर सोना (गहरी नींद में सोना)
- वह तो ऐसे सो रहा है जैसे घोड़े बेच कर सो रहा हो।
- गुड़ गोबर होना (बना बनाया काम बिगड़ जाना)
- उसके यहाँ आने से सारा गुड़ गोबर हो गया ।
- उल्टी गंगा बहाना (प्रतिकूल कार्य करना)
- बार-बार एक ही बात कहकर आप क्यों उल्टी गंगा बहा रहे हैं।
- बहती गंगा में हाथ धोना (अच्छा मौका देखकर फ़ायदा उठा लेना)
- वहाँ मुफ़्त में कंप्यूटर सिखाया जाता है , तुम भी बहती गंगा में हाथ धो लो।
- दूध का दूध, पानी का पानी (उचित न्याय करना)
- अदालत में जाने पर सब कुछ दूध का दूध , पानी का पानी हो जाएगा।

- अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना (अपनी बड़ाई आप करना)
- अज्ञानी लोग अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनते रहते हैं।
- अक्ल पर पत्थर पड़ना (बुद्धि खराब हो जाना)
- तुम्हारी अक्ल पर तो पत्थर पड़ गए हैं, कोई बात तुम्हारी समझ में आती ही नहीं।
- दाल में कुछ काला होना (कुछ गड़बड़ होना)
- रोहित को आज यहाँ आना था, पर वह नहीं आया। ज़रूर दाल में कुछ काल है।
- दाँत खट्टे करना (बुरी तरह हराना)
- रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेज़ों के दाँत खट्टे कर दिए।
- चिकना घड़ा (बेशर्म)
- वह चिकना घड़ा है, लाख समझाओ, मानता नहीं।
- कलई खुलना (रहस्य खुलना)
- ढोंगी साधु की हरकतों से उसकी कलई खुल गई।
- ऊँट के मुँह में जीरा (ज़्यादा खाने वाले को कम देना)
- भीम के लिए दस रोटियाँ ऊँट के मुँह में जीरा के समान है।
- अपने पैरों पर खड़ा होना (स्वावलम्बी होना)
- परीक्षा पास करके नौकरी पा जाओ, तो तुम अपने पैरों पर खड़े हो सकते हो।
- अपनी खिचड़ी अलग पकाना (सबके साथ न चलना)
- अरे भाई ! यदि सब लोग अपनी-अपनी खिचड़ी अलग पकाएँगे , तो देश की उन्नति कैसे होगी ?
- कान भरना (शिकायत करना)
- तुम उसके विरुद्ध मेरे कान मत भरो।
- हथेली पर सरसों जमाना (असंभव कार्य करके दिखाना)
- अगर मेहनत करो तो तुम भी अपने हाथों पर सरसों जमा सकते हो।
- घाट-घाट का पानी पीना (काफ़ी अनुभवी होना)
- तुम उसे उल्लू नहीं बना सकते, उसने घाट-घाट का पानी पी रखा है।

अशुद्ध वाक्यों का शोधन

अशुद्ध	शुद्ध
वह नावों पर सवार था।	वह नाव पर सवार था।
दस लड़की पढ़ रही हैं।	दस लड़कियाँ पढ़ रही हैं।
श्याम ने मुझे आगरा दिखाई।	श्याम ने मुझे आगरा दिखाया।
लता बड़ा मीठा गाता है।	लता बड़ा मीठा गाती है।
महादेवी वर्मा बड़ी विद्वान हैं।	महादेवी वर्मा बड़ी विदुषी हैं।
मैंने हँस पड़ा।	मैं हँस पड़ा।
मेरे को घर जाना है।	मुझे घर जाना है।
यमुना के अंदर पानी भरा है।	यमुना में पानी भरा है।
जितनी करनी वैसी भरनी।	जैसी करनी वैसी भरनी।
गुफ़ा में बड़ा अंधेरा है।	गुफ़ा में घना अंधेरा है।
भेड़ और बकरियाँ चर रही हैं।	भेड़ और बकरियाँ चर रहे हैं।
आप वहाँ अवश्य जाओ।	आप वहाँ अवश्य जाइए।
शत्रु डर कर दौड़ गया।	शत्रु डर कर भाग गया।
मैंने अपनी कलम मेरे भाई को दे दी।	मैंने अपनी कलम अपने भाई को दे दी।
चार दशरथ के पुत्र थे।	दशरथ के चार पुत्र थे।
मैं आगामी वर्ष दिल्ली गया था।	मैं गत वर्ष दिल्ली गया था।
बाघ एक कठोर जानवर है।	बाघ एक भयानक जानवर है।
सज्जन व्यक्ति किसी का अहित नहीं चाहते।	सज्जन किसी का अहित नहीं चाहते।
उनका बहुत भारी सम्मान हुआ।	उनका बहुत सम्मान हुआ।
वे वापस लौट आए हैं।	वे लौट आए हैं।

• डाकू परस्पर एक-दूसरे को संदेहकी नज़र से देखते हैं।	डाकू एक-दूसरे को संदेहकी नज़र से देखते हैं।
• तमाम देश भर में बात फैल गई।	देश भर में बात फैल गई।
• मेरा नाम श्री रामदास जी है।	मेरा नाम रामदास है।
• मुझे देखते ही उसका चेहरा गिर गया।	मुझे देखते ही उसका चेहरा उतर गया।
• कृपया आप ही यह समझाने का अनुग्रह करें।	आप ही यह समझाने का अनुग्रह करें।
• अभिनेत्री नृत्यकला का व्यायाम कर रही है।	अभिनेत्री नृत्यकला का अभ्यास कर रही है।
• उसे मृत्युदंड की सज़ा मिली है।	उसे मृत्युदंड मिला है।
• मैं साधु का दर्शन करने आया हूँ।	मैं साधु के दर्शन करने आया हूँ।
• उसने बंबई जाना है।	उसे बंबई जाना है।
• रोगी ने प्राण त्याग दिया।	रोगी ने प्राण त्याग दिए।
• वह पागल आदमी हो गया।	वह आदमी पागल हो गया।
• वह कहा कि मैं पत्र अवश्य लिखूँगा।	उसने कहा कि मैं पत्र अवश्य लिखूँगा।
• यह बात राम को पूछो।	यह बात राम से पूछो।
• रमेश को अनेकों कहानियाँ याद हैं।	रमेश को अनेक कहानियाँ याद हैं।
• मैंने यह काम नहीं करा।	मैंने यह काम नहीं किया।
• यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है।	यहाँ गाय का शुद्ध दूध मिलता है।
• वह कलाकार आदमी है।	वह कलाकार है।
• मेले में बच्चा खो गई।	मेले में बच्चा खो गया।
• मुझे केवल पाँच रुपए मात्र चाहिए।	मुझे केवल पाँच रुपए चाहिए।
• हम नहीं पढ़े हैं ये पुस्तकें।	ये पुस्तकें हमने नहीं पढ़ीं।
• प्रधानाचार्य आ रहा है।	प्रधानाचार्य आ रहे हैं।

उपसर्ग - प्रत्यय से शब्द निर्माण

(पाठ्य – पुस्तक से)

१. निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग छाँटिए :-

उदाहरण – विज्ञापित – वि (उपसर्ग) ज्ञापित

(क) संसर्ग – सम् + सर्ग (ख) उपमान – उप + मान (ग) संस्कृति – सम् :+ कृति

(घ) दुर्लभ – दुर् + लभ (ङ) निर्द्वंद्व – निर्+ द्वंद्व (च) प्रवास – प्र + वास

(छ) दुर्भाग्य – दुर् + भाग्य (ज) अभिजात – अभि + जात (झ) संचालन – सम् + चालन ।

२. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग लगाइए :-

जैसे - पुत्र – सुपुत्र

(क) वास – प्रवास (ख) व्यवस्थित – अव्यवस्थित (ग) कूल – प्रतिकूल/अनुकूल (घ) गति – प्रगति (ङ) रोहण – आरोहण (च) रक्षित – आरक्षित ।

३. निम्न उपसर्गों का प्रयोग कर दो-दो शब्द बनाइए :-

(१) ला - लाइलाज़ , लाज़वाब (२) बिला – बिलावज़ह , बिलाकुव्वत

(३) बे – बेमिसाल , बेवज़ह (४) बद – बदनाम , बदकिस्मत (५) ना – नाखुश , नामुमकिन (६) खुश – खुशकिस्मत , खुशनसीब (७) हर – हर पल , हरदिन

(८) ग़ैर – ग़ैरहाज़िर , ग़ैरकानूनी

४. ‘ त्व ’ प्रत्यय लगाकर पाँच शब्द बनाइए :-

(१) देवत्व (२) ममत्व (३) अपनत्व (४) गुरुत्व (५) लघुत्व (६) महत्त्व

५. ' इक ' प्रत्यय लगाकर शब्दों का निर्माण कीजिए :-

(१) सप्ताह + इक = साप्ताहिक (२) साहित्य + इक = साहित्यिक (३) व्यक्ति + इक = वैयक्तिक
(४) राजनीति + इक = राजनैतिक (५) अर्थ + इक = आर्थिक (६) धर्म + इक = धार्मिक
(७) मास + इक = मासिक (८) वर्ष +इक = वार्षिक ।

६. दिए गए उपसर्गों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए शब्द बनाइए :-

(१) अ = अ + संभव = असंभव (२) नि = नि + डर = नीडर
(३) अन = अन + आकर्षक = अनाकर्षक
(४) दुर् = दुर् + भाग्य = दुर्भाग्य (५) वि = वि + क्रय = विक्रय
(६) कु = कु + मार्ग = कुमार्ग (७) पर = पर + लोक = परलोक
(८) सु = सु+ आगत = स्वागत (९) अधि = अधि+ नायक = अधिनायक

नुक्ता (.)

१.	राज़ (शासन)	राज़ (रहस्य)
२.	जरा (बुढ़ापा)	ज़रा (थोड़ा)
३.	फलक (आकाश)	फ़लक (लकड़ी का तख्ता)
४.	फन (साँप का फन)	फ़न (कला / कौशल)

मुहावरे

१. टुकड़े चबाना – गरीब ,भिखारी टुकड़े चबाकर ही जीवन बिताते हैं।
२. पगड़ी उतारना – किसी गरीब की पगड़ी उतारना उचित नहीं।
३. मुरीद होना – अमिताभ के अभिनय – कला के सब मुरीद हो गए।
४. ज़ान वारना – सैनिक ने देश पर अपनी ज़ान वार दी।
५. तेग मारना – संपत्ति के लिए भाई –भाई एक-दूसरे पर तेग मारते हैं।
६. आड़े हाथों लेना – शिक्षक ने बदमाश छात्र को आड़े हाथों लिया ।
७. दाँतों तले अंगुली दबाना – ताजमहल देखकर लोग दाँतों तले अंगुली दबा लेते हैं।
८. लोहे के चने चबाना – हिमालय पर्वत पर चढ़ना लोहे के चने चबाने के समान है।
९. अस्त हो जाना – सुबह की पहली किरण के स्पर्श के साथ ही गिल्लू का जीवन-सूर्य अस्त हो गया।
१०. मंत्र-मुग्ध करना – विवेकानंद ने अपने भाषण से सबको मंत्र-मुग्ध कर दिया।

विलोम शब्द

१. सुगम- दुर्गम २. धर्म – अधर्म ३. ईमान – बेईमान ४. साधारण – असाधारण ५. स्वार्थ – परमार्थ ६. दुरुपयोग – सदुपयोग ७. नियंत्रित – अनियंत्रित ८. स्वाधीनता – पराधीनता ९. अनुकूल – प्रतिकूल १०. नियमित – अनियमित ११. आरोही – अवरोही १२. सुंदर – असुंदर १३. विख्यात – कुख्यात १४. निश्चित – अनिश्चित १५. सशक्त – अशक्त १६. ठोस – तरल १७. देशी – विदेशी १८. आकर्षण – विकर्षण ।

पर्यायवाची शब्द

१. चाँद – चंद्रमा , शशि , राकेश , रजनीश
२. ज़िक्र – वर्णन , ब्योरा , चर्चा
३. आघात- चोट , हमला , आक्रमण
४. ऊष्मा – गर्मी , ऊष्णता , ताप
५. अंतरंग – अभिन्न , प्रिय , करीबी

समानदर्शी शब्दों के अर्थ में अंतर

१. प्रमाण - मोहन चोर है , इसका क्या प्रमाण है।
प्रणाम - हमें बड़ों को सदा प्रणाम करना चाहिए।

२. धारणा - ऐसी ग़लत धारणा मन में मत रखिए।
धारण - हमें साफ़-सुथरे वस्त्र ही धारण करना चाहिए।

३. पूर्ववर्ती - १० की पूर्ववर्ती संख्या ९ है।
परवर्ती - ९ की परवर्ती संख्या १० है।

४. परिवर्तन - संसार में नित नए परिवर्तन होते रहते हैं।
प्रवर्तन - ईसा मसीह ने ईसाई धर्म का प्रवर्तन किया।

शब्द – युग्म

१.	सुख-सुविधा	हर मनुष्य सुख-सुविधा चाहता है।
२.	अच्छा-खासा	राम इस कंपनी में अच्छा – खासा कमा रहा है।
३.	प्रचार-प्रसार	हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार करना हर नागरिक का कर्तव्य है।
४.	आस-पास	हमारे विद्यालय के आस-पास हरी-भरी पहाड़ियाँ हैं।
५.	गाने-बजाने	मुझे गाने-बजाने का शौक है।
६.	टेढ़ी-मेढ़ी	टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों से होकर मुझे अपने घर तक जाना पड़ता है।
७.	गहरे-चौड़े	इन गहरे – चौड़े नालों में हमेशा पानी भरा रहता है।
८.	हक्का-बक्का	ताजमहल को देखकर मैं हक्का-बक्का रह गया।
९.	इधर-उधर	शिक्षक ने कहा , “ यहीं खड़े रहो , इधर – उधर मत जाओ।
१०.	लंबे-चौड़े	लंबे – चौड़े भीमकाय पहलवान को देखकर मेरी घिग्घी बँध गई।

१.	छन्नी-ककना	गरीब माँ ने अपना छन्नी-ककना बेचकर बेटे को पढ़ाया – लिखाया।
२.	अढ़ाई-मास	अब विवाह को केवल अढाई – मास ही रह गए हैं।
३.	पास-पड़ोस	हमें अपने पास – पड़ोस वालों से मिल-जुलकर रहना चाहिए।
४.	दुअन्नी-चवन्नी	भिखारी लोग दुअन्नी-चवन्नी के लिए दर-दर भटकते हैं।
५.	मुँह-अंधेरे	किसान को मुँह-अंधेरे ही काम पर जाना होता है।
६.	झाड़ना-फूँकना	ओझा ने आते ही झाड़ना-फूँकना शुरु कर दिया।
७.	फफक-फफककर	परीक्षा में फ़ेल हो जाने के कारण मोहन फफक-फककर रो पड़ा।
८.	बिलख-बिलखकर	भूख से बच्ची बिलख-बिलखकर रोने लगी।
९.	तड़प-तड़पकर	ठीक समय पर दवा न मिलने पर रोगी तड़प-तड़पकर मर गया।
१०.	लिपट-लिपटकर	बच्चा अपनी माँ की लाश से लिपट-लिपटकर रो रहा था।
११.	बेटा-बेटी	हर माँ-बाप को अपने बेटा-बेटी पर समान रूप से ध्यान देना चाहिए।

पाठ तथा रचनाकार

• रामविलास शर्मा ----------	• धूल
• यशपाल ----------	• दु:ख का अधिकार
• बचेंद्री पाल---------- -	• एवरेस्ट: मेरी शिखर यात्रा
• शरद जोशी----------	• तुम कब जाओगे , अतिथि
• धीरंजन मालवे----------	• वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन्
• काका कालेलकर----------	• कीचड़ का काव्य
• गणेश शंकर विद्यार्थी---------	• धर्म की आड़
• स्वामी आनंद----------	• शुक्र तारे के समान
• रैदास----------	• पद
• रहीम----------	• दोहे
• नज़ीर अकबराबादी-------	• आदमीनामा
• सियारामशरण गुप्त----------	• एक फूल की चाह
• रामधारी सिंह ‘ दिनकर ’------	• गीत-अगीत
• हरिवंशराय बच्चन----------	• अग्नि पथ
• अरुण कमल----------	• नए इलाके में
	• खुशबू रचते हैं हाथ

प्रस्तुति
फारुक एस.डी
हिंदी प्रशिक्षक

धन्यवाद !